International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

राष्ट्र निर्माण में साहित्य की भूमिका।

उर्मिला देवी

सिमडेगा कॉलेज सिमडेगा
सहायक प्रध्यापिका
हिन्दी विभाग

ईमेल आईडी –ud5456701@gmail.com

सारांश

साहित्य, समाज में सौहार्द, एकता और जागरूकता फैलाता है इसलिए राष्ट्र निर्माण में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। राष्ट्र निर्माण में साहित्य का योगदान शाश्वत प्रक्रिया है साहित्य में राष्ट्र के मार्ग निर्देशन की अद्भूत शक्ति है और इस तथ्य को प्रमाणित करने वाले उदाहरणों से इतिहास भरा हुआ है। जैसे–साहित्य ने पोप की प्रभुता को कम किया, फ्रांस में प्रजा की सत्ता का उदय और उन्नयन किया, पदाक्रांत इटली का मस्तक ऊँचा उठाया, परतंत्र भारत में स्वतंत्रता के लिए मर मिटने की अग्नि प्रज्जवलित की। इतना ही नहीं साहित्य स्वाधीन राष्ट्र के पुनर्निर्माण में शासकों को परामर्श दिया और सचेत किया। परतंत्र भारत का साहित्यकार विदेशी चाबुक की मार से चौक उठा साहित्यकारों ने अपने साहित्य को राष्ट्र देवता के चरणों में श्रद्धांजलि रूप में अर्पित कर दियां भारत के आधुनिक काल के साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र की वाणी से जो साहित्य–रूपी सुरसरि प्रवाहित हुई वह जयशंकर प्रसाद मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दंन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर', प्रेमचंद, यशपाल, अमृतलाल नागर रेणु, राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय, धर्मवीर भारती रूपी धाराओं में प्रवाहित हुई आज भी भारत–राष्ट्र को सिंचित और पल्लवित कर रहा है। राष्ट्रीय साहित्य से हमारा तात्पर्य उस साहित्य से है, जिससे किसी राष्ट्र की महिमा का गुणगान किया जाता है उसके अतीत गौरव के चित्र अंकित किये जाते हैं, जिससे समूचे राष्ट्र को अपनी स्वाधीनता एवं स्वतंत्रता के लिए आत्मोत्सर्ग करने हेतु प्रेरित किया जाता है, जिसमें राष्ट्र–प्रेम के साथ–साथ सम्पूर्ण राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता को स्थिर रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिसमें अपनी मातृभूमि एवं मातृभाषा के प्रति अटूट श्रद्धा एवं विश्वास प्रकट किया जाता है, जिसमें अपनी गौरवपूर्ण संस्कृति के प्रति तीव्रानुराग व्यक्त किया जाता है, जिसमें राष्ट्र–विरोधी पुरातन रूढ़ियों व परम्पराओं के प्रति जन–जन के हृदय में विद्रोह उत्पन्न करने की क्षमता होती है, जिसमें राष्ट्र विरोधी शक्तियों एवं शत्रुओं के प्रति तीव्र घृणा एवं क्षोभ जाग्रत करने की शक्ति

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

होती है और जो राष्ट्र की सामूहिक उन्नति, सामूहिक प्रगति एवं सामूहिक समृद्धि हेतु सर्वसाधारण के हृदय में तीव्र ज्वाला प्रज्ज्वलित करने में समर्थ होता है। ऐसे साहित्य में सम्पूर्ण राष्ट्र के अन्तर्गत उत्कट क्रांति एवं तीव्र आन्दोलन उत्पन्न करने की सामर्थ्य होती है और ऐसे साहित्य प्रायः उसी समय लिखे जाते हैं, जबकि कोई विदेशी आक्रमणकारी किसी राष्ट्र को अपनी पाशविक शक्ति का शिकार बनाकर उसे परतंत्र बनाने का प्रयत्न करता है अथवा परतंत्र बनाकर उस राष्ट्र के जन–जन को अपने क्रूर एवं उद्दण्ड शासन–चक्र से कुचलना चाहता है या कोई शासक दमन चक्र के द्वारा भोली–भाली जनता को दबाकर अन्याय एवं अधर्म के सहारे लूटता–खसोटता हुआ अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करता है। उस क्षण जन–जन के हृदय में क्रांति की लहर दौड़ने लगती है और कविजन अपनी रचनाओं के द्वारा उस क्रांति की और भी तीव्र रूप प्रदान करते हैं। अमेरिका, फ्रांस एवं रूस की जनक्रांति इसकी ज्वलंत प्रमाण है और भारत के स्वतंत्रता–संग्राम को उग्र रूप प्रदान करने वाली भी कितनी ही राष्ट्रीय साहित्य इसके प्रमाण में प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

परिचय

राष्ट्र का अर्थ –

- 'राष्ट्र' का मतलब है, एक ऐसा लोगों का समूह जो एक ही भाषा, इतिहास, संस्कृति और भूगोल साझाा करता है।
- राष्ट्र लोगों का एक समूह होता है जो एक ही देश में रहता है या एक ही राज्य या शासन में रहता है। राष्ट्र के लोगों में एकता की भावना रहती है।
- राष्ट्र के लोगों में समान परम्परा, समान हित और समान भावनाएँ होती है। राष्ट्र के लोगों में खुद पर शासन करने के अधिकार का दावा करने की इच्छा होती है।

'साहित्य' का परिचय –

- 'सहितस्य भाव साहित्यं' अर्थात् 'सहित' का भाव साहित्य है।
- सहित–स+हित=अर्थात् जिसमें सभी के हित का भाव हो, वह साहित्य है।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार :– "ज्ञान राशि के संचित कोश का नाम साहित्य है।"
- डॉ० नगेन्द्र के शब्दों में – "साहित्य आत्माभिव्यक्त जीवन की अभिव्यक्ति है।"
- प्रेमचंद के अनुसार – "साहित्य उसी रचना को कहेंगे जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गई हो जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो।"
- बालकृष्ण भट्ट के अनुसार – "साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है।"

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

- श्यामसुन्दर दास के अनुसार – "साहित्य वह है जिसमें जो कुछ लिखा गया है वह फला के उद्देश्यों की पूर्ति करता है।"
- साहित्य के चार तत्व होते हैं – भाव तत्व, बुद्धि तत्व, कल्पना तत्व और शैली तत्व।
- भाव तत्व – भावतत्व काव्य का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। इसे भारतीय आचार्यों ने साहित्य की आत्मा माना है। भाव तत्व के अभाव में साहित्य निष्प्राण व निर्जीव हो जाता है। सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर जब साहित्यकार उद्दात भावभूमि पर पहुँचकर कुछ सीखाता है, तभी वह रचना सत्–साहित्य की महिमा से विभूषित होती है।
- बुद्धि तत्व – इसे विचार तत्व भी कहा जाता है। बुद्धि तत्व, भाव एवं कल्पना तत्वों में समन्वय स्थापित करता है। यह तत्व साहित्य को विश्वसनीय बनाता है।
- कल्पना तत्व – कल्पना काव्य की सृजन शक्ति है काव्य में आनन्द का समावेश भाव व कल्पना तत्वों से ही होता है।
- शैली तत्व – काव्य के प्रथम तीन तत्व भाव पक्ष से संबंधित है तथा शैली तत्व का सम्बंध कला पक्ष से है।

राष्ट्र निर्माण में साहित्य की भूमिका

किसी भी समाज, नगर या राष्ट्र के निर्माण की आधारशीला में जिन तत्वों की गणना अग्रणीय है, उनमें से साहित्य वरीय है। 'राष्ट्र' का नवनिर्माण तब आवश्यक होता है जब उसके भूमि, जन और संस्कृति इन तीन अंगों में एक भी क्षरित या विकृत होने लगता है। आज भारत अपने नवनिर्माण की ओर अग्रसर है, जब भी भूमि, जन और संस्कृति विच्छिन्न होती है, साहित्य ही उसे संरक्षण प्रदान करता है। नई पीढ़ी को अपनी धरोहर का पुनर्बोध कराता है जब जन से जनत क परम्परा वहन कर मार्ग बाधित रहता है, साहित्य इस कर्त्तव्य क्षति की पूर्ति कर 'राष्ट्र' का सांगोपांग पुनर्निर्माण पुनः शून्य सृष्टि नहीं है क्योंकि यह पूर्णतः क्षय कभी नहीं हुआ और न होगा। अतः इसके क्षीण या क्षरित अंगोपांगों को पुनः स्वरूप में संधारित, संसाधित कर प्रतिष्ठित करना ही राष्ट्र का पुनर्निर्माण है।

'हितेन सह इति सष्टिमूह तस्याभावः साहित्यम्' यह वाक्य संस्कृत का एक प्रसिद्ध सूत्र वाक्य है, जिसका अर्थ होता है साहित्य का मूल तत्व सबका हितसाधन है। मानव अपने मन में उठने वाले भावों को जब लेखनीबद्ध कर भाषा के माध्यम से प्रकट करने लगता है तो वह रचनात्मकता ज्ञानवर्णक अभिव्यक्ति के रूप में साहित्य कहलाता है। साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है, क्योंकि साहित्य अतीत से प्रेरणा लेता है, वर्त्तमान को चित्रित करने का कार्य करता है और भविष्य का मार्गदर्शन करता है।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

साहित्य समाज से लेकर राष्ट्र की उन्नति और विकास की आधारशिला रखता है। इस संदर्भ में अमीर खुसरों से लेकर भारतेंदु, तुलसी, कबीर, जायसी, रहीम, प्रसाद, गुप्त, पंत, निराला, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर, प्रेमचंद, यशपाल, अमृतलाल नागर, रेणु, राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय धर्मवीर भारती, नागार्जुन तक की श्रृंखला के अनेकों रचनाकारों ने समाज से लेकर राष्ट्र के नवनिर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया है। इन्होंने व्यक्तिगत हानि उठाकर पर शासकीय मान्यताओं के खिलाफ जाकर समाज के निर्माण हेतु कदम उठाए यदि हम भारतेंदु जी की रचनाओं को देखे तो इन्होंने राष्ट्रीय भावों से ओत–प्रोत ओजमयी रचनाएँ प्रस्तुत किये हैं, भारतेंदु के समय में अंग्रेजी राज्य स्थापित हो चुका था। अंग्रेज अपनी वणिक वृत्ति द्वारा धीरे–धीरे सम्पूर्ण भारत पर अपना अधिकार जमाते चले जा रहे थे तथा यहाँ का धन लूट–खसोट कर इंगलैंड का कोष भर रहे थे। भारतेंदु ने उनकी इस कूटनीति एवं वणिक वृत्ति की घोर निंदा की और राजभक्त होते हुए भी जनता की दयनीय दशा को देखकर अंग्रेजों के विरूद्ध आवाज उठाई। इतना ही नहीं उन्होंने ही सर्वप्रथम समाज–सुधार, राष्ट–प्रेम, देश–भक्ति, नारी–शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति के महत्त्व की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट किया और अतीत के गौरव का गुणगान करके उनके हृदय में स्वदेश, स्वराष्ट्र एवं स्वभाषा के प्रति तीव्रानुराग उत्पन्न करने का स्तुत्य प्रयाय किये, वे कहते हैं –

"रोवहु सब मिलिकै, आबहु भारत भाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।।
अँगरेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन बिदेस चलि जात इ है अतिख्वारी।।

इसी प्रकार मैथिलीशरण गुप्त के काव्यों का भी हम अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि इन्होंने भी अपने काव्यों के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया । इसी कारण महात्मा गाँधी ने गुप्तजी को 'राष्ट्रकवि' की सर्वोच्च उपाधि से विभूषित किया। 'भारत–भारती' कविता में इन्होंने स्वदेश–प्रेम को दर्शाते हुए वर्त्तमान और भावी दुर्दशा से उबरने के लिए समाधान बताने का प्रयास कियें हैं –'साकेत' महाकाव्य में वे कहते हैं –

"भारत लक्ष्मी पड़ी राक्षसों के बंधनों में,
सिंधु पार वह बिलख रही है व्याकुल मन में।"

इसी तरह अनके साहित्यकार हमारे भारतवर्ष में उत्पन्न हुए, जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में योगदान देते आये हैं। इनकी कुछ पंक्तियों को निम्न बिन्दु में देखा जा सकता है –

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

जागृति संदेश –

"मजबूत कलेजों को लेकर
इस न्याय दुर्ग पर चढ़ो चलो,
माता के प्राण पुकार रहें,
संगठन करो, बस चढ़ो, चलो।"

प्राणोत्सर्ग की प्रेरणा –

"विजयिनी माँ के वीर सुपुत्र पाप से असहयोग ने ठाना।
गुँजा डाले स्वराज्य की तान और सब हो जावे बलिदान।
जग ये लेखनियाँ उठ पड़े मातृभू को गौरव से मढ़े।
करोड़ो क्रांतिकारिणी मूर्ति पलों में निर्भयता से गड़े।
और सब हो जावें बलिदान।"

क्रांति का आह्वान –

कवि कुछ ऐसी तान सुनावों जिससे उथल–पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से जाए।

अतीत का गौरवगान –

सम्पूर्ण देशो से अधिक किस देश का उत्कर्ष है ?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन ? भारत वर्ष है।

मातृभूमि की वंदना –

अरूण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

भारत अनेक भाषाओं का विशाल देश है। भारत के उत्तर–पश्चिम में पंजाबी, हिन्दी और उर्दू भाषाएँ बोली जाती है। पूर्वी प्रदेश में उड़िया, बंगला और असमिया, मध्यपश्चिम में मराठी और गुजराती और दक्षिण में तामिल, तेलुंगु, कन्नड और मलयालम इसके अतिरिक्त कश्मीरी, डोंगरी, सिंधी, कोंकणी आदि भाषाएँ हैं, जिनका साहित्यिक एवं वैज्ञानिक महत्त्व कम नहीं है। इनमें से प्रत्येक का अपना साहित्य है। अधिकांश साहित्य प्राचीनता, गुण, परिमाण आदि सभी दृष्टियों से अत्यंत समृद्ध है। इनमें वैदिक साहित्य, लौकिक साहित्य और पाली, प्राकृत, अपभ्रंश भाषा के साहित्य को भी सम्मिलित किया जाता है जिसका अपना स्वतंत्र एवं प्रखर वैशिष्ट्य है। जैसे –

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

तामिल को संगम साहित्य, तेलुगु के द्विअर्थी काव्य, मलयालम के संदेश काव्य, मराठी के पवाड़े, गुजराती के आख्यान, बंगला का मंगलकाव्य, असमिया के बड़गीत, पंजाबी के वीरगीत, उर्दू की गजल और हिन्दी का रीतिकाव्य, छायावादी काव्य आदि साहित्य विभिन्न भाषाओं के माध्यम से अभिव्यक्त, विभिन्न साहित्य एक होकर राष्ट्र निर्माण में अहम् भूमिका निभाते हैं।

निष्कर्षतः – निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि राष्ट्र निर्माण में साहित्य की अहम् भूमिका है। आज भारत से लेकर विश्व स्तर तक भारतीय साहित्य का गरिमामय गान हो रहा है। मॉरीशस, फीजी, सरीनाम, टिनीडाड आदि देशों में भी आप्रवासी भारतीयों के द्वारा भारतीय साहित्य की गरिमा फैल रहा है। इसके अतिरिक्त रूस, अमेरिका, इग्लैंड, इटली, जापान, चेकोस्लोवाकिया, फ्रांस, जर्मनी, स्वीडन, नार्वे, पोलैंड, हंगरी, हालैंड, आस्ट्रेलिया, चीन आदि देशों में भी भारतीय साहित्य का गुणगान हो रहा है। गोस्वामी तुलसीदास भारतीय काव्य साहित्य के सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय कवि हैं। इनका 'रामचरितमानस' भारतीय साहित्य महाकाव्य ही नहीं विश्व साहित्य का सबसे लोकप्रिय महाकाव्य है। तुलसीदास जी ने पूरे विश्व को शांति–सद्भाव का पाठ पढ़ाया। यह महाकाव्य विश्व मानवता की सरल, सलिल, सम्पूर्ण जगत में प्रवाहित हो सकने में समर्थ हुई । इसी प्रकार हमारे देश में अनेक वैदिक व लौकिक साहित्य हुए, जिनकी गणना आज विश्व साहित्य के अन्तर्गत किया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि जल्द ही ऐसा समय आएगा जब हमारा साहित्य विश्व साहित्य में सर्वश्रष्ठ होगा और भारत देश को विश्व गुरू के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

संदर्भ ग्रंथ

क्रम	लेखक	पुस्तक	पृष्ठ	प्रकाशन
1.	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	भारतन्दुर्दशा		संजय बुक सेंटर
2.	मैथिलीशरण गुप्त	साकेत	297	
3.	माखनलाल चतुर्वेदी	हिमकिरीटिनी	81	
4.	सुभद्रा कुमारी चौहान	मुकुल	106	
5.	बालकृष्णशर्मा नवीन	हम विषपायीजनम के	429	
6.	मैथिलीशरण गुप्त	भारत–भारती	4	
7.	जयशंकर प्रसाद	चन्द्रगुप्त	89	